प्राचीन भारतीय षाड्गुण्य नीति की वर्तमान में प्रासंगिकता

डॉ0 (श्रीमती) संजू*

''वही गुणवान व्यक्ति प्रशंसा का पात्र है जो राग द्वेष से ऊपर उठकर एकमात्र सत्य–निरूपण में ही अपनी भाषा व भाव का प्रयोग करता है '' – कल्हण

प्राचीनकाल में राज्येां के पारस्परिक सम्बन्धेां का आधार–युद्ध, विग्रह, यान, आसन, संश्रय तथा द्वैधी भाव अर्थात् षाड्गुण्य सिद्धान्त थे, विजिगीषु राजा के लिए केवल युद्ध ही एकमात्र उपाय नहीं था, परिस्थिति के अनुसार वह षाड्गुण्य नीति के अन्य उपायों का सहारा ले सकता था, प्राचीन भारत में राज्य की पराजय नीति का संचालन षाड्गुण्य के सिद्धान्त द्वारा किया जाता था। षाड्गुण्य नीति के छः प्रमुख अंग संधि, विग्रह, यान, आसन, संश्रय और द्वैधी भाव बताए गए है, किस समय अथवा किस परिस्थिति में किस उपाय का अनुसरण करना चाहिए तथा किस उपाय का क्या स्वरूप है ? उपरोक्त सभी बातों का वर्णन कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मिलता है। यूरोपीय विद्वानों मैकियावली, रूसों, अरस्तू ने भी राजा के स्वरूप का वर्णन किया है। सम्मान सहित प्रतिज्ञापूर्वक किसी अन्य राज्य से सम्बन्ध स्थापित करना सन्धि है, शत्रु के कमजोर पड़ने पर संधि करनी चाहिए। सम तथा अपने से प्रबल राजाओं से भी संधि करनी चाहिये। सेना आदि के द्वारा सशक्त राजा के आक्रांत दुर्बल राजा को चाहिए कि वह शीघ्र ही धन, सेना, भूमि आदि के सहित आत्मसमर्पण करके बलवान राजा से संधि कर ले, कौटिल्य के अनुसार संधियों के कई प्रकार होते है, जब विजित राजा, विजेता राजा के कहे अनुसार अपनी सामर्थ्य के अनुसार धन देकर (दासों का आदान–प्रदान भी प्रचलित था।) उसके सामने आत्मसमर्पण करता है तो वह आमिष संधि कहलाती है। सेनापति और राजकुमार को शत्रु के सम्मुख उपस्थित कर जो संधि की जाती है उसे पुरूषान्तर संधि कहते है। इस संधि के द्वारा आत्मरक्षा होने के कारण इसका दूसरा नाम आत्मरक्षण संधि भी है। जहाँ युद्ध में स्वसयं जाने व सिर्फ अपनी ही सेना लेकर जाऊँगा ऐसे शर्तनमों को अदृष्टपुरूष संधि कहते है।

उपर्युक्त संधियों के अनुसार अगर राजा प्रमुख राजाओं के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर ले या साम, दाम, दण्ड भेद की नीति का पालन करें जैस मुगल काल में (विशेषकर अकबर और राजपूतों के वैवाहिक सम्बन्ध, गौतम बुद्ध के समय में भी मगध राज्य में वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये थे।) देखने को मिलता है।

* वरिष्ठ प्रवक्ता, इतिहास विभाग, राजकीय महाविद्यालय अकबरपुर, कानपुर देहात

शक्तिशाली राजा मुख्य राज्य, व्यक्तियों की कन्याओं से विवाह करें अथवा शत्रु को गूढ़ प्रयोगों द्वारा वशीभूत करें ऐसी संधियों को दण्डोपनत संधि कहते है। धन आदि देकर गिरफ्तार अमात्य आदि को जिस संधि द्वारा छुड़ाया जाये उसे परिक्रय संधि कहते है इसके अतिरिक्त उपग्रह,अव्यय, सुवर्ण, कपाल, सम, विषम आदि अनेक प्रकार की संधियॉ है प्राचीन भारत में संधियों को मनवाने के लिये जमानत के रूप में शत्रु को व्यक्ति देने तथा अन्य प्रकार के प्रण करने या बन्धक रखने की पद्धति प्रचलित थी। ऋषि के अनुसार जिन कार्यो को करने से बलवान शत्रु भी मित्र हो जाये उस क्रिया को संधि कहते है। बलवान का दबाया हुआ राजा जब अन्य प्रतिकार न कर सकें तो उसे शत्रु के साथ संधि करनी चाहिए।

विग्रह शब्द का अर्थ युद्ध है, कौटिल्य के मतानुसार शक्तिशली राजा को हीन के विरूद्ध विग्रह की नीति अपनानी चाहिए। विग्रह से अपनी वृद्धि करने का उपाय यह है कि विजगीषु राजा को यहअनुभव हो जाए कि मेरे राज्य में शस्त्रजीवी और कृषि व्यक्ति अधिक रहते हैं, राज्य में प्रवेश करने का मार्ग भी एक ही है और यदि शत्रु द्वारा आक्रमण किया जाये तो उसे शत्रु के साथ विग्रह करना चाहिए और राज्य की सीमा पर अभेद्य दुर्ग का आश्रय लेकर शत्रु के साथ दुर्ग आदि कार्यो को नष्ट करने का विश्वास हो जाने पर ही विग्रह करना चाहिए। चाणक्य नीति के मतानुसार बलवान के साथ युद्ध नहीं करना चाहिये।

षाड्गुण्य नीति का एक उपााय संश्रय है जिसका अर्थ आश्रय अथवा सहारा होता है। अपने को निरा अशक्त जानकर किसी शक्तिशाली राजा का आश्रय ग्रहण कर लेना चाहिए। सामंत से ज्यादा बलवान राजा का आश्रय लेना चाहिए, यदि उतना बलवान राजा न मिले तो अपने प्रतिद्वन्दी सामन्त का ही आश्रय ले लेना चाहिए। मनु ने इसे दो प्रकार का बताया है, प्रथम जब शत्रुओं से पीड़ित होने पर दूसरे प्रबल राजा का आश्रय लिया जाता है द्वितीय वह जिसमें तत्कालीन आवश्यकता न रहने पर सर्वत्र अपना प्रभाव दिखाने के लिए प्रबल राजा से संधि करके उसका आश्रय लिया जाता है, जिससे अन्य शासक इस बात से डरते रहे कि उसे प्रबल राजा का सहारा है, अतः उसके विरूद्ध आचरण न करें, जिन राजाओं से रक्षित होने पर दुर्बल राजा भी बलवान हो जाए, उसका सहारा लेना आश्रय या संश्रय कहलाता है।

आसन जिसका अर्थ है तटस्थता कौटिल्य के अनुसार कुछ विद्वानों ने संधि और विग्रह के अन्तर्गत ही आसन तथा यान को माना है, स्थान और उपेक्षण आसन के पर्याय है, इसकी कुछ विशेषताऐं होती है जैसे एक विशेष प्रकार की नीति के कारण शान्त रहना स्थान है, अपनी वृद्धि और शक्ति बढ़ाने के लिए चुप रहना आसन है, लड़ाई से हट जाना या लड़ते हुए भी उपेक्षा भाव रखना उपेक्षण है, परस्पर हानि पहुंचाने में असमर्थ तथा संधि की

इच्छा रखने वाले विजिगीषु राजा यदि यह समझे कि अपनी सेना तथा मित्र राजा की सेना तैयार हो जाने के बाद सम तथा ज्यादा (अपने से प्रबल) राजा को पराजित कर सकूंगा तो आन्तरिक और बाह्य तैयारियॉ करें, वह युद्ध की घोषणा करके चुप बैठ जाए, यदि वह समझे कि कुछ ही समय के बाद मेरा प्रकृति–मण्डल प्रोत्साहित और संगठित हो जाएगा और जो मेरा अभीष्ट है वह बिना किसी रूकावट के सिद्ध हो जाएगा और शत्रु के कार्यो को हानि पहुंचा सकूंगा तो युद्ध की घोषणा करके वह चुप हो जाए।

यान जिसका अर्थ चढ़ाई करना होता है, जब विजिगीषु यह समझे कि शत्रु व्यसन पीड़ित है, (अधिकांशतः सभी राजा किसी न किसी व्यसन से अवश्य पीड़ित थे) और उसका प्रकृति मण्डल अनिवार्य कष्ट भोग रहा है या आन्तरिक कलह निरत है तथा अपने राजा से उदासीन है अथवा उसमें आपसी एकता का अभाव है। वह शक्ति समृद्धि रहित है और उसे लालच देकर मिलाया जा सकता है। शत्रु, अग्नि, जल, बीमारी, संक्रामक रेाग या दुर्भिक्ष से पीड़ित है उसमें योग्य पुरूषों का अभाव है और उसकी संरक्षण शक्ति घट रही है तो उस पर चढ़ाई कर देनी चाहिए, यदि वह यह समझे कि मेरा मित्र तथा आक्रन्द (साथी) वीर और स्नेह भाव वाला है और शत्रु की दशा इसके विपरीत है, तो आक्रन्द और मित्र के सहारे उसे शक्तिहीन, पाष्णिग्राह से युद्ध की घोषणा कर चढ़ाई कर देनी चाहिए, यदि शत्रु पर आक्रमण करना जरूरी समझे और अकेले चढ़ाई करने में असमर्थ है तो वह सम, हीन प्रजा आदि के साथ गठबन्धन कर संयुक्त रूप से चढ़ाई करे।

षाड्गुण्य नीति का एक अन्य उपाय द्वैधी भाव है जिसका अर्थ दुरंगी नीति होता है, कोटिल्य के अनुसर एक ही उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एक के साथ संधि और दूसरे के साथ विग्रह करना द्वैधी भाव है शुक्र के मतानुसार जब राजा को समय के अनुसार अपने कार्य का उपाय निश्चित न हो उस समय वह काग के नेत्र समान द्वैधी–भाव का व्यवहारकरें और किसी को प्रतीत न होने दे। (भेष बदलकर स्वयं राज्य की नीति को जानने के लिए भ्रमण कर निकलना और गुप्तचर विभाग में महिलाओं की नियुक्ति करना जैसा चन्द्रगुप्त मौर्य करते थे– "Chandra gupt was not only a great souldier and conqueror he was a great administrator)" मनु के अनुसार द्वैवीभाव का अर्थ दो भागों में विभक्त होना है, राजा को चाहिए कि सेनापति को सेना सहित शत्रु– राजा के उपद्रव को शान्त करने के लिए एक स्थान में रखे और स्वयं राजा दुर्ग का आश्रय ले। कामन्दक ने उसे धोखा देने के अर्थ में लिया है अर्थात् राजा तैयारी तो आक्रमण ही करता रहे, किन्तु ऊपर से शान्ति की बात चलाता रहे, जैसा पर्ल हार्बर पर आक्रमण करते समय जपानियों ने किया था और इस नीति का पालन निपोलियन बोनापार्ट और विस्मार्थ भी बहुत अपनाते थे।

मनु के अनुसार उपर्युक्त अवसरों पर इनका उपयोग इस प्रकार करना चाहिये–

1. जब राजा यह देखे कि संधि करने से अपनी थोड़ी सी भी हानि होती है, परन्तु बाद में अधिक लाभ की सम्भावना है, तो संधि कर लेनी चाहिये।
2. जब राजा यह देखे कि इसकी समस्त प्रकृति (अमात्य आदि) बहुत अच्छी स्थिति में है और वह स्वयं अत्यन्त उन्नत दशा में है तब विग्रह करना चाहिये।
3. जब राजा अपने बल को (सेना आदि) को बलवान समझे और शत्रु की दशा इसके विपरीत हो, तब उसे शत्रु के विरूद्ध यान करना चाहिये।
4. जब राजा यह देखे कि उसकी सेना और वाहन की दशा अच्छी नहीं है तथा उनके ठीक होने में कुछ समय लग सकता है तो धीरे–धीरे शत्रु की सांत्वना करता हुआ आसन का आश्रय ले।
5. जब राजा यह देखे कि शत्रु पक्ष अधिक बलवान है तब वह चतुराई से अपनी सेना को दो भागों में बॉटकर (द्वैध का आश्रय लेकर) अपने कार्य साधन करे।
6. जब राजा यह देखे कि शत्रु राजा इतना बलशाली है कि दुर्ग के आश्रय लेने पर भी रक्षा संभव नहीं है तथा पराजित होने का भय है तब वह दूसरे बलवान राजा का आश्रय ले।

प्राचीन भारत में अर्न्तराज्य सम्बन्धों का एक प्रमुख आधार तो षाड्गुण्य नीति थी, एक दूसरा आधार नीति के चार मान्य उपाय साम, दाम (दान) भेद और दण्ड थे, कूटनीति के इन चारों उपायों का रामायणकाल से ही प्रयोग होने लगा था, बाद में ये उपाय श्रेष्ठ बन गए, राजा अपने ध्येय की प्राप्ति के लिए इनमें से किसी का भी प्रयोग कर सकता था।

साम का अर्थ है अपने व्यवहार से दूसरों को सन्तुष्ट तथा प्रसन्न करके उन्हें अपने अनुकूल बनाना या वशीभूत करना, सज्जन को वश में करने तथा अपने अनुकूलबनाने का सर्वोत्तम उपाय साम ही है, साम दो प्रकार का होता है – तथ्य (वास्तविक) अर्थात् सच्चे ह्रदय से किया हुआ और अतथ्य (झूठा व दिखावटी) यद्यपि साम तथा राक्षस भी वश में हा जाते है फिर भी जो दुर्जन व कुटिल है, उनके प्रति साम का प्रयोग अपनी कमजोरी दिखाना है।

दाम सब उपायों में श्रेष्ठ है, ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं, जिसे धन देकर अपने वश में न किया जा सकता हो, दान से देवताओं को भी वश में किया जा सकता है, पुरोहित देवताओं का आव्हान कर युद्ध में सफलता की कामना करता था। राजा युद्ध भूमि में सैनिकों को इस प्रकार सम्बोधित करता था – ''तुम्हारे ही समान मैं भी वेतन भोगी हूँ (तुल्यवेतनोऽस्मि) तुम्हारे

ही साथ हम इस राज्य का भोग करेगे। अतः मेरे द्वारा बतलायें शत्रु का विनाश करो।'' दानवान राजा शत्रुओं पर शीघ्र विजय प्राप्त कर लेता है, सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद दान नीति का उदारता से पालन किया । परस्पर संघटित शत्रुओं में भी दान द्वज्ञरा ही भेंद या फूट डाली जा सकती है, यद्यपि ऐसे भी पुरूष/शत्रु होते है जो निर्लोभ या गम्भीर होते है, उन्हें दान द्वारा वश में नहीं किया जा सकता, परन्तु उन्हें उन्हीं की नीति के द्वारा अपना बनाया जा सकता है।

भेद से तात्पर्य है कि किसी युक्ति से शत्रु में फूट डाल देना, जो अपने से आशा दिखाए तथा दूसरों से भय दिखाए, ऐसे शत्रुाओं को भेद डालकर परास्त करना चाहिये, (फूट डालों राज्य करों जो नीति प्राचीनकाल से आते–आते अंग्रेजों ने सर्वोत्तम रूप से प्रयेाग किया।) संघटित (Unity is strength) शत्रु इन्द द्वारा भी नहीं जीते जा सकते, इसलिए राजनीति के विद्वान भेद के पक्षधर है, भेद नीति से शत्रु को थोड़ी ही सेना द्वारा परास्त किया जा सकता है।

दण्ड का अर्थ है दमन केरना, यदि शत्रु अन्य तीनों उपायो द्वारा वश में न आए तो दण्ड का प्रयोग करना चाहिए। अदण्डनीय को दण्ड देने से तथा दण्डनीय को दण्ड न देने से राजा अथवा राज्य खो बैठता हे, अतः राजा को धर्मशास्त्र के नियमों के अनुसार ही दण्ड का प्रयोग करना चाहिये।

कौटिल्य के कथनानुसार यदि कोई राजा अपने से दुर्बल है , तो उसे साम तथा दाम से वश में करना चाहिए, इसके विपरीत बलवान के लिए भेद और दण्ड का प्रयाग करना चाहिए, भूमिदान, द्रव्यदान, कन्यादान, अभयदान देने आदि उपायों से दुर्बल राजा के साथ दाम का प्रयोग करना चाहिए, सामन्त, आटविक, वातव्य के किसी खानदानी, नजरबन्द हुए दातव्य के पुत्र इनमें से किसी एक को अपने अधीन करके उसके द्वारा कोष, सेना, भूमि तथा अपने दायभाव की याचना कराकर बलवान राजा और उसके सामन्तों में फूट डालनी चाहिए, (जैसे मुगलकाल में खुसरों और खुर्रम के साथ हुआ था) इसी प्रकार प्रकाश युद्ध, कूट, युद्ध और तृष्णी युद्ध द्वज्ञरा तथा विषपान आदि उपायों के द्वारा शत्रु को वश में करना दण्ड व्यवहार है, मनुस्मृति के अनुसार, राजा, साम, दाम और भेद की नीति का एक एक अथवा सम्मिलित रूप से प्रयोग कर अन्य राजाओं को विजित करें, युद्ध द्वारा नहीं कामन्दक नीतिशास्त्र में भी उल्लेख मिलता है कि युद्ध में प्रायः दोनों ही पक्षेां का नाश होता है, अतः साम, दाम, भेद तीनों के निष्फल होने पर ही युद्ध का आश्रय लिया जाए, राजनीति के इन चारो आधारेां का प्रयोग शत्रुओं तथा अन्य राजाओं के साथ सम्बन्धों के निर्धारण तक ही सीमित नहीं था, वरान् उनका प्रयोग राजनीति के अन्य मामलों में भी होता था।

निष्कर्ष :–

उपर्युक्त नीतियों की वर्तमान में अत्यन्त आवश्यकता है अपितु कुछ संधियाँ भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में कुशलता कें साथ प्रयोग की जा रही है। (जैसे अभी कुछ दिन पूर्व नेपाल में भूंकप आने के बाद भारत द्वारा सहायता देना मित्रता को और प्रगाण करता है और जो मानवीय दृष्टिकोण से उचित है।) वर्तमान में सशक्त शासन करने या सशक्त नेता बनने के लिये वर्तमान में भारतीय नेता राजनीति से प्रेरित होकर उपर्युक्त कार्यो को बखूबी अंजाम दे रहे है, चुनाव के समय काला धन निकालकर लोगों को तोहफे देना और अपना वोट बैंक बढ़ाना। नेता ''फूट डालों और राज्य करों'' की नीति को अपनाते है परन्तु यह नीति वर्तमान में अत्यधिक कारगर सिद्ध नहीं हो पा रही है। क्योंकि अब जनता शिक्षित व जागरूक है। इसी क्रम में यह बताना भी अनिवार्य है कि अगर किसी नेता की अवहेलना किसी असहाय ने कर दी तो उसको इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। यह नीतियाँ भारत के अन्दर भी है, परन्तु भारत के अर्न्तराष्ट्रीय सम्बन्ध मधुर है। आवश्यकता है अपनी प्राचीन भारतीय षाड्गुण्य नीति को आवश्यकतानुसार को अपनाते हुए अत्यधिक लाभ प्राप्त करने की है। उपर्युक्त नीतियों की प्राचीनकाल में ही नहीं वर्तमान में ज्यादा आवश्यकता है। वास्तव में जब तक मानव समाज का अस्तित्व पृथ्वी पर रहेगा प्राचीन भारतीय षाड्गुण्य नीति विधमान रहेगी।

विचार बिन्दु :–

1. Much of the material and moral progress of the country was ultimately the outcomes of its stablized political conditons. R. K. Mukherji.
2. India was not then in a State of Pupilage, but the teacher of all Asia and he borrowed western – suggestions to mould them to her own way of thinking – Havell.
3. The Hindus of every age were as successful in evolving new and bold sytems of philosophy as in building large and study vessels to cary good oversea. - Altekar.

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. झा एवं श्रीमाली : प्राचीन भारत का इतिहास।
2. डा0 रामवृक्ष सिंह : प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कतिक इतिहास।
3. डा0 शिव स्वरूप सहाय : हिन्दू राज्य और समाज।

****